वर्तमान समय में कार्मिक महिलाओं की आर्थिक एवं मनोसामाजिक स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ अन्जना सिंह पाल
बाबू रामेश्वर सिंह महाविद्यालय महोबाए, सहायक आचार्यए (समाजशास्त्र)

भोध सारां ा– अपने दे ा भारत में कई द ाकों से नारियों को (महिलाओं को) जॉव करना एक आम बात है। परिवार के पालन पोशण एवं आर्थिक सहायक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इस तरह उन्हें चुनौतीपूर्ण भूमिका का सामना करना पड़ रहा है। एक तरफ पारिवारिक जिम्मेदारियां दूसरी तरफ ऑफिस की भमिका का निर्वहन करना चुनौतीपूर्ण संघर्श का सामना करना पड़ रहा है। अर्थात् महिलाओं को जॉव के साथ–साथ अपने नाते रि तों का भी सामंजस्य करना पड़ता है, क्योंकि जरा सा भी दोनों भूमिकाओं में असन्तुलन होने पर बहुत ही निन्दनीय व्यवहार का सामना करना पड़ता है। ऐसे व्यवहार से कार्यरत् महिलायें अपने आपको बहुत ही उलझा हुआ महसूस करती है। स्वतन्त्रता के बाद महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ और उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग की महिलाओं की ि ाक्षा दिलाने का प्रयास किया गया जिससे वो अपनी योग्यता के आधार पर आत्मनिर्भर बनने की कोि ा ा करने लगी। कुछ महिलाये ंतो सफल हो गई लेकिन कुछ महिलाओं को असफलता का सामना करना पड़ा, लेकिन जो महिलायें सफल हुई उनसे और महिलाओं ने प्रेरणा ली आगे आत्मनिर्भर बनने के लिए आगे बढ़ने का प्रयास किया, हमने अपने भोध के अन्तर्गत कामकाजी महिलाओं को इस दोहरी भूमिका निभाने में कितनी कठिन समस्या का सामना करना पड़ रहा है। इसको प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। किये गये भोध में 50 महिलाओं का डेटा संग्रह किया है।

प्रस्तावना

इतिहास गबाह है कि सामाजिक विकास के अन्तर्गत महिलाओं का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है जितना कि पुरुशों का। महिलाओं के द्वारा किये गये कार्यों और रोजगार के समक्ष बराबर की हिस्सेदारी किसी भी समाज को उच्च स्थिति प्रदान करना एवं प्रगति करने के महत्वपूर्ण संकेतक है। समाज में महिलाओं को काम करने के लिए विभिन्न प्रकार के कारण एवं समस्यायें है। जिसकी बजह से उन्हें इस दोहरी भूमिका की चक्की में पिसना पड़ रहा है। अपने दे ा भारत में महिलाओं के परिवार में आर्थिक बोझ दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, जिसके कारण ज्यादातर महिलायें जॉव करने के लिए मजबूर हो रही है। वर्तमान समय में हर विभाग में महिलायें काम कर रही हैं।

भारतीय परम्परा के अनुसार पहले घर के काम काज महिलाओं द्वारा करवाये जाते थे लेकिन आज के बदलते परिवे ा में महिलाओं के घर के काम काज तो अनिवार्य रूप से करने ही है। लेकिन जो संस्था या ऑफिस में भी उनसे काम करने की उम्मीद की जा रही है। कामकाजी महिला को पुरुश की अपेक्षा उसे दोहरा काम करना पड़ता है और बच्चों की परवरि ा एवं परिवार के लोगों को ख्याल भी रखना पड़ता है। एकाकी परिवार ने वो परिवार के किसी सदस्य से मदद की कामना नहीं कर सकती ऐसे में वो और भी आर्थिक परे ाान हो जाती है।

अध्ययन के उद्दे य

1. कामकाजी महिलाओं की आर्थिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन।
2. कामकाजी महिलाओं एवं सामाजिक सामंजस्य का अध्ययन।

व्यवहारों का वि लेशणात्मक अध्ययन

कामकाजी महिलाओं की स्वास्थ्य सम्बन्धी का अध्ययन कामकाजी महिलाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन कामकाजी महिलाओं की मनोसामाजिक स्थिति का अध्ययन कामकाजी महिलाओं की परिवार, मानसिक स्थिति और ऑफिस के सामंजस्य का अध्ययन।

अध्ययन क्षेत्र एवं निद न पद्धति

प्रस्तुत भोध पत्र के अध्ययन की ईकाई झाँसी नगर की कामकाजी महिलाओं की है। प्रस्तुत भोध में झाँसी महानगर की कामकाजी महिलाओं का निद न पद्धति द्वारा चयन किया गया है। झाँसी भाहर के 50 कामकाजी महिलाओं का अध्ययन साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा किया गया है। प्राथमिक श्रोत से प्राप्त किये गये आँकड़ों को तालिकाओं से प्रद ित किया गया है।

समीक्षा

संगीता कुमारी (2020) भारतीय कामकाजी महिला की स्थिति दो पाटों में फंसे घुन के समान हो गई है। उसे ऑफिस और घर दोनों की जरूरतों को पूरा करना होता है। यदि यह दोनों में सन्तुलन स्थापित करने में असमर्थ होती है तो उसे भारी निन्दा का सामना करना पड़ता है। प्रत्येक कामकाजी महिला का घरेलू जीवन दयनीय होता है। आज भारतीय महिला सजगता और जिम्मेदारी से कार्यभार और घर के कार्यों को संभाले हुए है। परिवार को व्यवस्थित करके पति के आर्थिक मदद करने और सुख सुविधाओं से प्रयत्न है अर्थात् उन्हें अपने घर–परिवार, रि ते–नाते के साथ ऑफिस सबको ठीक से चलाना पड़ता है। इन सब में महत्वपूर्ण है। दोनों के बीच सन्तुलन क्योंकि किसी एक पक्ष को गलती से भी इग्नोर करने पर जीवन की गाड़ी डगमगाने लगती है।

जो ी राजकमल (2001) महिलायें नौकरी करते हुए भी गुलामी सहती है। वे अपने कमाये पैसे इच्छानुसार खर्च नहीं कर सकती, उसकी बिडम्बना यह भी है कि अपने बारे में कोई निर्णय नहीं ले सकती। निर्णय नौकरी का है या विवाह का अथवा किसी का हो वह स्वाधीन नहीं है। माता–पिता यदि नौकरी करा भी देते हैं तो विवाह के उपरान्त ससुराल वालों की इच्छा पर निर्भर है कि वह नौकरी करने देते हैं अथवा नहीं। संरचनात्मक परिवर्तन द्वारा ही पुरुश पौरूशीय दुराग्रह से मुक्त किया जा सकता है। अगर स्त्रियां खुद को मुक्त कर लेती है तो अपने दमनकताओं को भी मुक्त करा लेगी।

नीरा दे ाई कामकाजी महिलाएँ पारिवारिक तनावों से दूर रहने के लिए कार्यरत् है, लेकिन जब वे पारिवारिक उत्तरदायित्वों को ठीक ढंग से नहीं निभा पाती है। अधिक समय तक कार्य करने पर अपने पति व बच्चों की देखभाल ठीक से नहीं कर पाती। यद्यपि उनके प्रेम व स्नेह में कोई कमी नहीं होती लेकिन इस स्थिति में पति, पत्नी व परिवार के मध्य तनाव की स्थितियां उत्पन्न होती है।

दुबे का कथन है, ''महिलाओं की प्रासंगिक आर्थिक स्वतंत्रता के प्रति प्रगति को बहुत से पुरुश उभयभावी के रुप में देखते हैं। जिसमें कुछ पा चात्य ि ाक्षित भी भाामिल है। एक कामकाजी (कार्मिक) पत्नी आर्थिक रूप से उपयोगी है। यदि वह उच्च पद पर काम करती है तो उसकी एक वि ोश सामाजिक प्रस्थिति भी है लेकिन उसका दूसरे लोगों के साथ वि ोशकर पुरुशों के साथ मिलना जुलना उचित नहीं समझा जाता है। बाहर के कार्यों के कारण उसके व्यस्त रहने से परम्परागत घरेलू दायित्वों की कुछ अवहेलना होती है। और इस अवहेलना के कारण प्रतिकूल प्रतिक्रिया दिखाई देती है। कामकाजी महिलायें स्वयं भी अपनी दोहरी भूमिका के निर्वाह में कठिनाई अनुभव करती है। और इनमें से कुछ तो अपनी नयी भूमिका के कुछ पुरुशोचित पहलुओं से पूरी तरह प्रसन्न नहीं है।

स्वयं के कमाये गये धन पर व्यय करने का हक अधिकां ा महिलाओं के हाथ में नहीं है। जिसके कारण उनमें हीन भावना पनपने लगती है, उसके कमाये हुये धन के साथ उनकी इच्छाओं को भी महत्व देना चाहिए क्योंकि स्त्री स्वभावतः निवे ाी प्रवृत्ति की होती है। उसके द्वारा की गई छोटी–छोटी बचत परिवार के ही काम आती है।

कामकाजी महिलाओं की समस्यायें

आज के वर्तमान समय के तकनीकी युग में महिलायें ि ाक्षा, पत्रकारिता, कानून, चिकित्सा एवं इंजीनियरिंग के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाएं दे रही है। पुलिस और सेना में भी वे जिम्मेदारी निभा रही है पर अधिकां ा महिलाओं को पारिवारिक जिम्मेदारी भी उठानी पड़ती है, जिसका उनके स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है।

दो नावों पर सवार– आधुनिक समय के बदलते परिवे ा में महिलाओं को आर्थिक स्तर, भौक्षिक स्तर, सामाजिक रूप से स ाक्त किया है और उनकी हैसियत एवं सम्मान वृद्धि हुई है और इसके बावजूद अगर कुछ नहीं बदला तो वह है। महिलाओं की पारिवारिक जिम्मेदारी जैसे बच्चों की परवरि ा, घर सम्भालना आदि अभी भी महिलाओं का ही काम माना जाता है। अर्थात् महिलाओं को दोहरी भूमिका निभानी पड़ रही है। घरेलू महिलाओं की तुलना में कामकाजी महिलाओं पर काम का बोझ ज्यादा पड़ रहा है। इन महिलाओं को अपने कार्य क्षेत्र और घर सम्भालने के लिए अधिक से अधिक परिश्रम करना पड़ रहा है।

प्रो0 अर्चना के अनुसार, कामकाजी महिलाओं की स्थिति दो भावों पर सवार व्यक्ति के समान होती है।

स्वास्थ्य (सेहत) पर असर– स्वास्थ्य वि ोशज्ञों के अनुसार ऑफिस और घर संभालने की दोहरी जिम्मेदारी के कारण तनाव बढ़ता है और विभिन्न प्रकार की बीमारियां पैदा होती है। अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरा करने के चक्कर में महिलायें अक्सर अपनी सेहत को नजर अन्दाज करती है। कामकाजी महिलायें अन्य बीमारियों की चपेट में जल्दी आ जाती है।

तालिका संख्या–01

कामकाजी महिलाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन

क्र. सं.	आर्थिक स्थिति	इकाईयों की संख्या	इकाईयों का प्रति ात
1.	उच्च स्तर	10	20%
2.	मध्य स्तर	15	40%
3.	निम्न स्तर	25	40%
	कुल योग	50	100%

तालिका संख्या–01 से स्पश्ट होता है कि कामकाजी महिलाओं की कुल 50 ईकाईयों में से 10 ने यह स्वीकार किया है कि उनकी आर्थिक स्थिति उच्च स्तर की है वो अपने पैसे की स्वयं मालिक है। जबकि 15 ईकाईयों ने यह स्वीकार किया है कि उनकी स्थिति मध्यम स्तर की है। भोश 25 ईकाईयां ऐसी है जिनका स्तर बहुत ही निम्न हैं। वो अपने स्वयं के पैसे का इस्तेमाल नहीं कर सकती उनके पैसे के मालिक उनके पति या परिवार वाले होते हैं।

तालिका संख्या–02

कामकाजी महिलाओं की मानसिक स्थिति का अध्ययन

क्र. सं.	मानसिक स्थिति	इकाईयों की संख्या	इकाईयों का प्रति ात
1.	उच्च स्तर	06	12%
2.	मध्यम स्तर	15	30%
3.	निम्न स्तर	29	58%
	कुल योग	50	100%

तालिका संख्या 02 से स्पश्ट हुआ है कि 10 ईकाईयां ऐसी है जिनकी मानसिक स्थिति ठीक है क्योंकि वह पहले से ही सुख समृद्ध थी इसलिए उनकी स्थिति अच्छी थी लेकिन 15 ईकाईयां ऐसी पायी गयी है जिनकी स्थिति मध्यम स्तर की है। न वो खु ा ही है, न ही वो परे ाान है, बस ठीक ही है। जबकि 29 महिलायें ऐसी है जिसकी स्थिति बहुत ही नाजुक है, वो बहुत ही तनाव ग्रसित है। उनके परिवार वाले उन्हें सपोर्ट नहीं करते इसलिए उन्हें दोहरी भूमिका निभाने में बहुत ही परे ाानी होती है। कई महिलाये ंतो माइग्रेन की ि ाकार भी पायी गयी है।

तालिका संख्या–03

कामकाजी महिलाओं का परिवार और ऑफिस में सामजंस्य का अध्ययन

क्र.सं.	परिवार और ऑफिस में सामजंस्य	इकाईयों की संख्या	इकाईयों का प्रति ात
1.	अधिक सामंजस्य	12	24%
2.	सामान्य सामंजस्य	15	30%
3.	निम्न सामंजस्य	23	46%
	कुल योग	50	100%

तालिका संख्या–03 में प्रस्तुत किया गया है कि 12 ईकाईयां ऐसी है जो अपने परिवार में तालमेल करने की और ऑफिस में कार्यों को व्यवस्थित करने की उनमें अधिक क्षमता है। लेकिन 15 महिलाये ऐसी पाई गई है जिसमें सामंजस्य करने की क्षमता सामान्य थी जबकि 23 ऐसी महिलायें पायी गयी जिनमें सामंजस्य करने की क्षमता बिल्कुल कम पड़ जाती है। क्योंकि उनके परिवार वाले उनका किसी भी प्रकार का सहयोग नहीं करते और कुछ कार्य बिगड़ने पर लड़ाई झगड़े एवं तरह–तरह की बातें भी सुनाते हैं जिसका प्रभाव उनके ऑफिस में जॉव पर भी पड़ता है।

तालिका संख्या–04
कामकाजी महिलाओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी स्थिति का अध्ययन

क्र.सं.	स्वास्थ्य सम्बन्धी स्थिति	इकाईयों की संख्या	इकाईयों का प्रति ात
1.	उच्च स्तर	06	12%
2.	मध्यम स्तर	14	28%
3.	निम्न स्तर	30	60%
	कुल योग	50	100%

तालिका संख्या 04 से स्पश्ट हुआ है कि 6 ईकाईयां ऐसी है जिनके पारिवारिक सदस्य सहयोगी है। इसलिए उनका स्वास्थ्य ठीक है। लकिन 14 महिलायें ऐसी है जिनका स्वास्थ्य सामान्य रहता है। जबकि 30 महिलायें ऐसी है जो विभिन्न प्रकार की बीमारियों से ग्रसित है क्योंकि उनके पारिवारिक सदस्य सहयोगी है नहीं है इसलिए वह अपने स्वास्थ्य का ध्यान नहीं दे पाती और विभिन्न प्रकार की बीमारियों का जायजा करती रहती है।

निश्कर्श

तालिका संख्या 01 के अन्तर्गत भाोधार्थी ने अध्ययन में पाया कि कुल 50 ईकाईयों में से 10 ईकाईयों ने स्वीकार किया है कि उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी है क्योंकि उनके परिवारजनों में सभी सरकारी नौकरी में है जोकि सम्पूर्ण ईकाईयों का 20 प्रति ात है जबकि 15 ईकाईयों ने नहीं स्वीकार किया कि उनकी स्थिति सामान्य है जोकि सम्पूर्ण का 30 प्रति ात है लेकिन 25 ईकाईयां ऐसी है जिनका स्तर बहुत ही निम्न है। जो कि सम्पूर्ण ईकाईयों का 50 प्रति ात है।

तालिका संख्या 02 के अन्तर्गत भाोधार्थी ने अध्ययन में पाया कि 06 ईकाईयां ऐसी है जिनके परिवारजन सहयोगी है। उनकी मानसिक स्थिति ठीक है जो 12 प्रति ात है जबकि 15 ईकाईयों ने यह स्वीकार किया है कि जिनकी स्थिति मध्यम स्तर की है न वो खु ा है न ही परे ाान है कि जो सम्पूर्ण का 30 प्रति ात है। 29 महिलायें ऐसी मिली जिनकी स्थिति बहुत ही दयनीय है कि मेहनत करने के बाद भी न ही उनका सम्मान है न ही उनके स्वास्थ्य की किसी को चिन्ता है। वो किसी भी हालत में हो उन्हें ऑफिस और घर को संभालना ही पड़ता है।

तालिका संख्या 03 के अन्तर्गत भाोधार्थी ने पाया कि 12 ईकाईयां ऐसी है जो अपने परिवार में और ऑफिस में तालमेल करने की उनमें अधिक क्षमता है जो कि सम्पूर्ण का 24 प्रति ात है। जबकि 15 ऐसी मिली जिसमें सामंजस्य करने की क्षमता सामान्य थी जो कि सम्पूर्ण ईकाईयों का 30 प्रति ात है। जबकि 23 महिलायें ऐसी पाई गई जिनकी स्थिति बहुत ही निम्न हैं। उनका परिवार के साथ सहयोग न मिलने के कारण ऑफिस और घर में सामंजस्य नहीं कर पाती जो कि 46 प्रति ात है।

तालिका संख्या 04 के अन्तर्गत भाोधार्थी ने अध्ययन में पाया कि 06 ईकाईयां ऐसी है जो अपने परिवार के सभी सदस्य मिलकर कार्य करते हैं। इसलिए उनका स्वास्थ्य सही है जो कि सम्पूर्ण का 12 प्रति ात है। लेकिन 14 महिलायें ऐसी मिली जिनका स्वास्थ्य स्तर सामान्य था जोकि 28 प्रति ात है। जबकि 30 महिलाओं ने यह स्वीकार किया कि उनका स्वास्थ्य स्तर बहुत ही सामान्य था वह कोई बीमारियों (माइग्रेन, थाइराइड, पथरी एवं जोड़ों में दर्द या पेट दर्द) से भी ग्रसित पायी गयी है। उनकी स्थिति बहुत ही दयनीय पायी गयी है। जो सम्पूर्ण ईकाईयों को 60 प्रति ात है।

सुझाव

[1] महिलाओं के प्रति परिवारजनों को सहानुभूति के साथ व्यवहार करे।

[2] कामकाजी महिलाओं के साथ सहयोग एवं सम्मान का भाव रखना चाहिए।

[3] उनके अस्वस्थ होने पर पारिवारिक एवं ऑफिस के कर्मचारियों का सहयोगी भाव रखे एवं ध्यान रखे।

[4] वेद पुराणों में लिखा है कि जिस दे ा में नारी का सम्मान करते हैं उस दे ा में देवता निवास करते हैं तो महिलाओं का सम्मान करें।

[5] उनकी बेइज्जती न करे, न ही अपमान करे, घर के कामकाज में पुरुश भी भागीदार बने।

सन्दर्भ सूची–

[1] दुबे, एस0सी0 (1963) मैन्स एण्ड वूमेन्स सेल्स इन इण्डिया वूमेन इन द न्यू ए ाया (संस्करण) बरबारा ई0 बार्ड पेरिस यूनेस्को, पृश्ठ संख्या 194–95.

[2] जर्मन ग्रीयर (2001) द फीमेल यूनेक का हिन्दी रूपान्तरण विद्रोही स्त्री अनुवादक मुधु0 वि0 जोशी राजमकल प्रका ान, पृश्ठ संख्या 19.

[3] चटोपाध्याय अरूंधती (2012) भारतीय राज्यों में स्त्री स ाक्तिकरण योजना, जून 2012, योजना भवन, नई दिल्ली।

[4] दे ाई नीरा, आधुनिक भारत में महिलाएं।

[5] कलारानी, रोल कॉनफ्लिक्ट इन वर्किंग वूमेन्स।

[6] संगीता कुमारी (2020) कामकाजी महिलाएँ : समस्यायें एवं समाधान (वर्तमान परिवे ा के सन्दर्भ में) ISSN No-2394-7500 IIAR 6(10) Page 94-96.

[7] वि व रत्न श्रीवास्तव 08/03/2016